www.thearyasamaj.org

[redacted]

RNI No. ...81/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र



मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 27
सृष्टि संवत् 1960853117
2 अक्तूबर, 2016
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 27, 29-2 अक्तूबर 2016 तदनुसार 17 आश्विन सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

## भगवान् का मन्यु जो कुछ करता है उसे

*-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ*

**न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः।**
**यदस्य मन्युरधिनीयमानः श्रृणाति वीळु रुजति स्थिराणि।।**

-ऋ० १०।८९।६

**शब्दार्थ**-**न** = न **द्यावापृथिवी** = द्यौ और पृथिवी, **न** = न **धन्व** = जल **न** = न **अन्तरिक्षम्** = अन्तरिक्ष **न** = न **अद्रयः** = पर्वत और **सोमः** = सोम **यस्य** = जिसके [सामर्थ्य को] **अक्षाः** = प्राप्त करते हैं **यत्** = जैसे **अधिनीयमानः** = अधिकारपूर्वक प्रयोग किया जाता हुआ **अस्य** = उस भगवान् का **मन्युः** = मन्यु **श्रृणाति** = काटता है, वह **स्थिराणि** = स्थिर पदार्थों को भी **वीळु** = बलपूर्वक **रुजति** = तोड़-फोड़ देता है।

**व्याख्या**-द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, पर्वत, समुद्र आदि जगत् के पदार्थों के सामर्थ्य का तनिक विचार कीजिए। पृथिवी का एक नाम पूषा = पुष्टि करने वाली, पालने वाली है। समस्त प्राणियों की-कीट से लेकर मनुष्य तक सभी जीवों की पालना करती है। इसी दृष्टि से वेद में अनेक स्थानों पर पृथिवी को माता कहा गया है। भारी भरकम पर्वतों का धारण करना, नदी-नाले, समुद्रों को अपने उरः स्थल पर स्थान देना महती शक्ति की सूचना दे रहा है। विविध पदार्थों की, जिनकी गणना और इयत्ता मनुष्य भी पूर्णरूपेण नहीं जान सका, उत्पादिका होने से यह पृश्नि कहलाती है। द्यौ कितना विशाल है ! पृथिवी से कई लाख गुणा विशाल सूर्य द्यौ में रहता है। वेद कहता है-'**सप्त दिशो नाना सूर्याः**' [ऋ० ९।११४३] = अनन्त सूर्य हैं। असंख्य ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र, ध्रुव, आकाश-गङ्गा आदि सभी द्यौ में रहते हैं। निः सन्देह द्यौ ससीम है, किन्तु मनुष्य उसकी ससीमता का निर्धारण न कर सका। इसी भाँति पृथिवी और द्यौ के अन्तरालवर्ती अन्तरिक्ष की महिमा भी विशाल है।

इन अति विशाल पदार्थों को जाने दीजिए। पृथिवी में कील के समान खड़े पर्वतों को देखिए। कहीं हिम से आच्छन्न हैं, कहीं वृक्षों से लदे हैं, कहीं सर्वथा निवारण-नङ्गे हैं। इनमें आग है, पानी है, नीलम है, सोना है, चाँदी है, लोहा है, तांबा है और क्या नहीं है, यह कहना कठिन है। ये सब मिलकर भी उसकी महत्ता को नहीं पा सकते। इसके विपरीत उसका मन्यु देखिए, वह '**शृणाति**' काट-छाँट देता है। '**वीळु रुजति स्थिराणि**' = स्थिर पदार्थों को भी तोड़ देता है। मन्यु का अर्थ लौकिक संस्कृति में क्रोध होता है, किन्तु वैदिक भाषा में सभी शब्दों के यौगिक होने के कारण उसका अर्थ है-मननपूर्वक, आवेशपूर्वक किसी कार्य का सम्पादन।

इस यौगिक सिद्धान्त के कारण ही मन्यु के सम्बन्ध में आता है-

**मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः।**
**मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः।।**

-ऋ० १०।८३।२

मन्यु इन्द्र है, मन्यु ही देव है, मन्यु ही होता, वरुण और जातवेद है। मानुष प्रजाएँ मन्यु को पूजती या चाहती हैं, तप का प्रेमपूर्वक सेवन करने वाले मन्यो ! तू हमारी रक्षा कर।

ऋग्वेद [१०।८३] में मन्यु कई पदार्थों के लिए प्रयुक्त है। अन्यत्र ऋग्वेद [१०।८४।२] में मन्यु को सेनानी = सेनानायक भी कहा गया है-'**अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि**' = हे मन्यो ! अग्नि की भाँति तेजस्वी सबको दबा और सेनानी-सेनानायक होकर, आमन्त्रित होकर युद्ध में समर्थ हो। प्रकृत मन्त्र में मन्यु का अर्थ भगवान् का प्रलयकारक बल है। वह समुद्र को सुखा देता है, पृथिवी को धूलि बनाता है, तेजोमय सूर्यादि को निस्तेज कर देता है।

**स्वाध्याय संदोह से साभार**

### आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

*आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा। **-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा***

www.thearyasamaj.org



## आज के विकृत संस्कार

# संतति के उत्कृष्टता के लिये जन्म दाता उत्तरदायी एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

ले. -पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है। शिक्षा से मानव में सत्य व आध्यात्म का संस्कार बनता है, आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खो चुका है। जब युवा 25 वर्ष पढ़ लिख कर व्यवसाय में उतरता है तो कोई डाक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइन्टीस्ट, आदि आदि बन जाता है। किन्तु नैतिक व आध्यात्मिक संस्कार न होने के कारण वह अपने-अपने व्यवसाय में भ्रष्टाचार करना शुरु कर देता है, और सारा समाजिक वातावरण दूषित हो जाता है, और मानवता की जगह दानवता पनपने लगती है।

आज आवश्यकता है बच्चों को शुरु से ही वैदिक, सात्विक संस्कारों की शिक्षा दी जाये, ईमानदारी और सदाचार का पाठ पढ़ाया जाये।

मेरे अनुभव के आधार पर दूसरी सामाजिक व्यवस्था व संस्कारों का कारण है झूठी मर्यादा का जाति वर्ग का संस्कार। हिन्दू-मुसलमान-सिख-ईसाई-यहूदी-अंग्रेज के घर जन्म लेता है तो मां के पेट से ही उसमें कथित धर्म के संस्कारों का समावेश हो जाता है, और पैदा होने पर से ही उस पर वही मान्यता और धर्म संस्कारों को थोंपा जाता है, और वह जीवन भर वही भाषा व धर्ममत संस्कार मानता है, और उसी मान्यता को अपनी मर्यादा व हठधर्मी का व्यवहार करता है। परिणाम स्वरूप अलग-अलग धर्म संस्कारों के कारण कत्ले आम, मारपीट, मानवों में अत्याचार, घोर अन्धविश्वासों की मान्यताऐं मान कर संसार में अशान्ति फैली हुई है और सारा संसार बारूद के ढ़ेर पर बैठा है।

सुसन्तान की उपयोगिता सभी समझते है पर उसके लिये माता पिता बनने वाले अपना स्तर ऊंचा उठाने का प्रयत्न नहीं करते। वैज्ञानिकों का इस सन्दर्भ में जीन्स को उत्तरदायी बताना है, और उनकी मानसिकता सत्य और संस्कारित होना आवश्यक है।

### उत्तम भविष्य के लिये सुप्रजनन भी आवश्यक

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी समाज में आदर्श समाज चाहते थे इसीलिये उन्होंने मानवों के उत्तम संस्कारों पर बल दिया। उन्होंने संस्कार विधि बना कर सोलह संस्कारों की आज्ञा दी जो जन्म से मृत्यु तक एक आदर्श समाज दे सकते हैं। महर्षि दयानन्द जी का सोचना था कि देव मानवों का निर्माण सुगढ़ सुसंस्कारी दम्पति ही कर पाते हैं। उच्च संस्कारों अर्थात् वेदानुकूल संस्कारों के बिना सुसंतति को जन्म देना सम्भव नहीं है।

**उच्च संस्कारों की नई पीढ़ी ही परिष्कृत बीज कोषों से उत्तम संतति जनेगी**-स्वयं विद्वान बनने के लिये अध्ययन, अभ्यास, स्वाध्याय, और कला कौशल की प्रवीणता के लिये सुसंस्कारवान बनना आवश्यक है। प्रजनन का उत्तरदायित्व वहन करने के लिये भूत काल में मात्र शुक्राणु और डिम्बकीट के सम्मिलन को श्रेय दिया जाता रहा है। पर अब उसके भीतरी अति सूक्ष्म घटकों का पता चला है।

जिन्हें गुणसूत्र कहा जाता है। इन्हें इलेक्ट्रान, प्रोटान न्यूट्रान, पाजिटांन आदि नामों से जाना जाता है। ठीक इसी प्रकार अब प्रजनन घटक शुक्राणु डिम्बाणु के भीतर पाये जाने वाले सूक्ष्म गुण सूत्र न केवल प्रजनन के वरन वंश परम्परा के साथ लिपटी हुई अनेकानेक क्षमताओं एवं विशेषताओं को हस्तान्तरित करने वाले माने गये है।

### व्यक्तित्व मात्र वंश परम्परा से नहीं बनता

शरीर के बाहरी अवयव तो जाने पहचाने हैं, पर उनके भीतर छोटे-छोटे अरबों खरबों जीव कोशों की श्रृंखला विद्यमान है। ये सभी अपने-अपने निर्धारित कार्यों में लगे रहते हैं। इन कोशाओं के भीतर एक विशाल भण्डार विद्यमान है। इनके भीतर गुणसूत्रों के ऐसे घटक रहते हैं जो प्रजनन प्रक्रिया में काम आते हैं। नर नारी दोनों में यह घटक रहते हैं। दोनों पक्ष आपस में गुंथ कर एक नई सृष्टि का आरम्भ करते हैं। भ्रूण की स्थापना इसी आधार पर होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार शिशुओं का जन्म और उनकी विशेषता इन्हीं छोटे-छोटे इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप से देखे जाने वाले घटकों की विकसित प्रक्रिया पर निर्भर है।

### विलासिता हमें अपंग करके छोड़ेगी।

वर्तमान अति भौतिक विलासिता को देख कर यह अहसास होता है कि कुछ हजार वर्ष बाद तो सम्भवत: एक भी बच्चा शुद्ध जन्म नहीं लेगा, उनमें से अधिकांश कोई न कोई रोग लेकर जन्मेंगे, कई तो ऐसे भी होंगे जो आज के वीर्य रोगों से रोगी मनुष्य की संतान होने के कारण नपुसंक भी होंगे। इसलिये कोई सन्देह नहीं आने वाली पीढ़ी अपने अंग खो दे। इसका कारण मानवीय मस्तिष्क में धन क्षेत्र का निरन्तर विस्तार। आज मनुष्य चलता तो बहुत है पर बैठे-बैठे चलता है। रेलें, मोटरें, वायुयान, चलाते है। खाता बहुत है जीभ खिलाती है सुनता बहुत है, रेल, मोटरों की गड़गड़हाट सुननी पड़ती है। इससे मनुष्य को शान्ति देने वाले हारमोन्स का स्त्रोत खत्म होता जा रहा है। विचार शक्ति प्रौढ़ होती जायेगी और इन्द्रियों की क्षमता गिरती जायेगी जिससे भावी संतति भी अपंग एवं संस्कार हीन ही होती जायेगी।

### परिवेश मनुष्य को भी बदल देता है

मनुष्य पारदर्शी कांच की तरह है, उसी रंग का दिखने लगता है, जिस तरह के रंग के सम्पर्क में आता है तथा वह परिस्थिति के स्तर का बन जाता है। जहां ऊंचे उठाने वाली परिस्थितियों में रह कर व्यक्ति-सम्मुनत बनता है, वहां निष्कृष्ट परिस्थितियां उसे निरन्तर गिराती चली जाती है। इसलिये मनुष्य को प्रकृति के अनुकूल व आत्मोत्थान के परिवेश में रहना होगा।

### वातावरण हमें स्वयं ही बनाना होगा

व्यक्ति निर्माण से लेकर समाज निर्माण तक के लिये जहां व्यक्तिगत जीवन को आदर्श वादिता के सहारे प्रखर प्रतिभावान बनाने की आवश्यकता है और ऐसा वातावरण तैयार किया जाये, जिसमें ईश्वरीय व्यवस्थानुसार वैदिक संस्कार, व्यवहार, आचार, और आदर्श जीवन पद्धति अपनाई जाये।

### वंशानुक्रम ही सुप्रजनन का मूल आधार

माता पिता की शारीरिक और मानसिक संरचना के अनुरुप सन्तान का स्वास्थ्य और बुद्धि का विकास होता है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि उद्गम स्त्रोत शुक्राणु का स्तर क्या और कैसा है। यह बच्चों के शरीर और मन के निर्माण व्यक्तित्व, भविष्य और चरित्र की सम्भावना पर पूरी तरह लागू होता है।

### हम सुधरेंगे तो बच्चे सुधरेंगे

आज के हमारे कुसंस्कार व सुसंस्कार कल के बच्चे में वही संस्कार आते हैं। संस्कारों की शक्ति इतनी बलवान होती है कि वह आने वाली पीढ़ी के मन ही नहीं शरीरों को भी प्रभावित कर सकती है। इसलिए हमें गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा कि भावी पीढ़ी संतति दिनों दिन संस्कारहीन उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी बन रही है क्या उसका कारण हम तो नहीं है।

प्रत्येक पति पत्नी उच्च आदर्श संस्कार वैज्ञानिक और वैदिक सिद्धान्तों पर धार्मिक मान्यताऐं नियमित जीवन दिनचर्या, सात्विक आहार नियमित आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, नियमित यौगिक क्रियायें, अपना कर भविष्य के लिए आदर्श संतति दे सकते हैं।

अत: भावी पीढ़ी आदर्श वंश परम्परा का संस्कार माता-पिता से ही प्रारम्भ होता है।

www.thearyasamaj.org



सम्पादकीय.....

# उड़ी में सेना मुख्यालय पर हमला कायरतापूर्ण कार्रवाई

उड़ी में सेना में मुख्यालय पर आतंकवादियों द्वारा किया गया हमला उसकी कायरतापूर्ण कार्रवाई को उजागर करता है। इस तरह पीठ के पीछे से वार करना कायरता का कार्य है। उड़ी हमले में 18 जवानों की शहादत के बाद समूचा देश गुस्से में है। देश की जनता पाकिस्तान को लेकर तनिक भी मौका देने के पक्ष में नहीं है। लोग सवाल कर रहे हैं कि आखिर कब तक हमारे जवान इस तरह शहीद होते रहेंगे। उड़ी में सेना के कैम्प पर हुआ आतंकवादी हमला दिखाता है कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का खतरा ज्यों का त्यों बरकरार है। कुछ दिनों पहले इसी तरह पुंछ के सैनिक शिविर पर भी हमला किया गया था। इस साल जनवरी में पठानकोट के वायुसेना अड्डे पर भी आतंकियों ने हमले किए थे जिसमें सात जवानों की मौत हो गई थी। इन तमाम घटनाओं में पाकिस्तान में चल रहे आतंकी संगठनों का हाथ होने की पुष्टि हो चुकी है। उड़ी के जिस सैनिक ठिकाने पर ताजा हमला हुआ वह नियन्त्रण रेखा से सटा हुआ है और इस प्रकार की घटनाएं पाकिस्तानी सेना की मदद के बिना सम्भव नहीं है।

उड़ी में सेना के मुख्यालय पर सीमा पार से आतंकवादियों द्वारा बर्बर हमले के बाद अब प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी सरकार के लिए यह कठिन होगा कि वह सब कुछ सामान्य मानकर पुरानी स्थिति में लौट जाए। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान को सबक सिखाया जाए। भारत की जनता अपने प्रधानमन्त्री से इस समय यही चाहती है कि शहीदों की शहादत का बदला लिया जाए। पाकिस्तान के लिए इस समय कठोर रूख अपनाने का समय आ गया है। आतंकवादियों का महिमामण्ड़न करने वाले पाकिस्तान को भी यह समझना चाहिए कि आतंकवाद से पाकिस्तान का भी कभी भला नहीं होगा। दूसरों के घर में आग लगाते-लगाते कभी अपने घर में ऐसी आग लगेगी कि उसे बुझाना पाकिस्तान के लिए मुश्किल होगा।

सभी सरकारें पाकिस्तान द्वारा छेड़े गए छदम युद्ध का जवाब देने के लिए तर्कसंगत, ठोस और दो टूक फैसले लेने में विफल रही हैं। इसका परिणाम है कि भारत एक मामूली पड़ोसी देश के हाथों आतंकी हमले का शिकार होने को मजबूर है। एक लापरवाह देश पाकिस्तान सोचता है कि वह इस तरह भारत को चोट पहुंचा है और भारत से बदला ले सकता है। इधर भारतीयों का सब्र का बांध टूट रहा है, सरकार पर लगातार दवाब डाला जा रहा है कि सरकार ठोस कदम उठाए ताकि पाकिस्तान से इन आतंकवादी हमलों का बदला लिया जा सके। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की ओर इस समय सभी का ध्यान है कि वे क्या करते हैं क्योंकि उन्होंने बहुत प्रयास किया कि भारत और पाकिस्तान के रिश्तों में सुधार हो, आतंकवाद की समस्या समाप्त हो परन्तु हर समय निराशा ही हाथ लगी। दीनानगर में आतंकी हमला, पठानकोट में आतंकी हमला हुआ। इन दोनों अवसरों पर भारत ने पाकिस्तान को जांच में पूरा सहयोग दिया परन्तु पाकिस्तान की तरफ से कोई भी सहयोग नहीं किया इसलिए अब एक ही विकल्प बचता है कि इस आतंकी हमले के बाद कड़ी से कड़ी कार्रवाई करे ताकि आगे से इस प्रकार की कायरतापूर्ण कार्रवाई न हो।

भारत जैसे बड़े और ताकतवर देश के खिलाफ इस प्रकार छद्म युद्ध की लागत भी कम है। भारतीयों को एक प्रश्न पर जरूर विचार करना चाहिए कि क्या भारत सीमा पार से आतंकवाद फैलाने वाले पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए तैयार है भारत के पास पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक विकल्प मौजूद हैं। इन विकल्पों का नपे-तुले और तर्कसंगत तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत 1960 की जलसंधि से हाथ खींचकर पाकिस्तान को सबक सिखा सकता है। पाकिस्तान भारत के साथ हुए तमाम द्विपक्षीय समझौतों की लगातार अवहेलना कर रहा है। शिमला समझौते में कहा गया है कि पाकिस्तान अपनी जमीन से भारत के खिलाफ आतंकवाद की अनुमति नहीं देगा। लेकिन सच्चाई आज इसके विपरीत है। जब पाकिस्तान शिमला समझौते को नहीं मान सकता तो भारत भी सिंधु जलसंधि से पीछे हटने पर विचार कर सकता है। सिंधु जलसंधि दुनिया में सबसे एकतरफा और अनुसूचित जलसंधि है। यह भारत को अपने राज्य कश्मीर में औद्योगिक और कृषि उत्पादन के लिए नदियों के पानी का प्रयोग करने के मौलिक अधिकार से वंचित करती है। इस संधि के जरिए जम्मू कश्मीर की प्रमुख नदियों चिनाब, जेहलम और सिंधु तथा इनकी सहायक नदियों के पानी को पाकिस्तान के लिए सुरक्षित किया गया है। इस प्रकार का सहयोग होते हुए भी पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आया। कभी न कभी पीठ के पीछे से वार करता रहा। इस पड़ोसी देश के कारण भारत में कई बार अशान्ति का माहौल बना रहा। चाहे वह संसद पर हमला हो, मुम्बई का हमला हो या उड़ी हमला हो। पाकिस्तान की धरती पर पनपने वाले आतंकवाद ने हमेशा ही भारत में अशान्ति फैलाने का कार्य किया है। अब समय आ गया है कि पाकिस्तान की हर नापाक हरकत का सही और प्रभावी ढ़ंग से जबाव दिया जाए। पाकिस्तान के साथ सब प्रकार के सम्बन्धों को समाप्त करके उसे आतंकी देश घोषित किया जाए। हिन्दुस्तान की जनता इस समय यही चाहती है कि पाकिस्तान को सबक सिखाया जाए।

विदुर नीति में कहा गया है क्षमा बहुत बड़ी शक्ति होती है परन्तु इसके साथ एक ही दुर्भाग्य जुड़ा होता है कि क्षमाशील व्यक्ति को मूर्खजन कायर मान लेते हैं। यही बात भारत व पाकिस्तान के बीच है। भारत जितना सहष्णिु देश है, पाकिस्तान उतना ही कट्टर और असहिष्णु है। भारत बार-बार इच्छा करता है कि पाकिस्तान उसका छोटा भाई है एक दिन समझ जाएगा परन्तु पाकिस्तान बार-बार अशिष्ट, निंदित अमर्यादित व्यवहार करता जा रहा है। इसलिए अब उचित समय आ गया है कि क्षमाभाव को छोड़कर शठे शाठ्यं समाचरेत् वाली कहावत के अनुसार दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करते हुए उसे सबक सिखाया जाए। पाकिस्तान के साथ किसी प्रकार की शान्ति वार्ता सम्भव नहीं है जब तक वह आतंकवाद को जड़ से खत्म नहीं करता। अपनी सरजमीं पर भारत के विरूद्ध पैदा होने वाले आतंकवाद को उसे हर हाल में समाप्त करना होगा तभी भारत और पाकिस्तान के बीच सामान्य रिश्ते बन सकते हैं।

**प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

www.thearyasamaj.org



## यज्ञीय पञ्चांग (4)

# ऋत्विक

-ले० पं० वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E कैलाश नगर, फाजिल्का-152123 पंजाब

(गतांक से आगे)

यज्ञ प्रक्रिया को चार भागों में विभक्त किया गया है। जिनके प्रधान कार्यकर्ता नियुक्त किए जाते हैं। जिन पर निर्दिष्ट कार्यों का विशेष उत्तरदायित्व होता है। इन्हें ऋत्विक्। ऋत्विज् कहते हैं।

''जातं जातं विदेता'' अर्थात् ये ऋत्विक यज्ञ सम्बन्धी आवश्यक सभी बातों के जानकार होते हैं।

इस सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं-

**अग्न्या धेयं पाकयाज्ञानन्ि-ष्टोमादिकान मखान्।**

**यः करोति वृतो यस्य स तस्यर्त्विगिहोच्यते।। मनु० 2/143**

जो अग्न्याधेय (आहवनीय अग्नि), पाकयज्ञ (बलि-वैश्वदेवादि), अग्निष्टोमादि (ज्योतिष्टोम-पंचदिवसीय स्वर्ग-काम्य यज्ञ) यज्ञों को वरण कर जिसे कराता है। उसे ऋत्विक् कहते हैं।

ऋतौ ऋतौ यजनी यः सर्वेषु ऋतुषु यजनीयः वा = समय-समय पर अर्थात् प्रत्येक ऋतु में जो यज्ञ कराने योग्य है, वह ऋत्विक् है।

ऋत्विक्-यज्ञ-साधनों का संगतिकरण करने वाला ऋत्विक् है।

ऋतौ यजति, ऋतुं वा यजति, ऋतुप्रयुक्तों वा यजति।। कौशका

**देवलोकस्य चर्त्विजः।। मनु. 4/182**

**ऋत्विज् देवलोक के स्वामी हैं।**

**ऋत्विग् यज्ञकृदुच्यते।। याज्ञ. स्मृ 1/15**

**यज्ञ कराने वाला ऋत्विग् कहलाता है।**

महर्षि दयानन्द की कसौटी पर ऋत्विक्-

ऋत्विजों के लक्षण-अच्छे विद्वान्, धार्मिक, जितेन्द्रिय, कर्म करने में कुशल, निर्लोभी, परोपकारी, दुर्व्यसनों से रहित, कुलीन, सुशील, वैदिक मत वाले, वेदविद् एक, दो, तीन अथवा चार का वरण करें।

जो एक हो तो उसका नाम पुरोहित और जो दो हों तो ऋत्विक्, पुरोहित, और तीन हों तो ऋत्विक्, पुरोहित और अध्यक्ष, और जो चार हों तो होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा।

संस्कार विधि सामान्य प्रकरण वर्तमान समय में प्रायः केवल एक पुरोहित का ही वरण किया जाता है। वही यज्ञ का संचालक, अध्यक्ष, नियन्त्रक और अधिष्ठाता होता है। अतः उसे 'ब्रह्मा' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। पुरोहित का अर्थ है-

1. पुरोहित-निर्वचन के आधार पर-

1. पुरः हितम्-पहले से ही रखे हुए, जो हमारे सामने आदर्श के रूप में विद्यमान है। (पं० हरिशरण)

2. पुरोज्ग्रे यजमानं दधाति।। उणादि कोष जो यजमान का हित आगे रखता है।

3. पुरः एनं दधाति।। जो सर्वहित साधक है।

पुरोहित की विशेषता का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द संस्कार विधि के 'जातकर्म संस्कार' में लिखते हैं-

''धर्मात्मा, शास्त्रोक्त विधि को पूर्णरीति से जानने हारा, विद्वान्, सद्धर्मी, कुलीन, निर्व्यसनी, सुशील, वेदप्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा है।''

महर्षि के कथन का आशय यही है-ऋत्विज् अकुशल या अयोग्य नहीं होने चाहिए, क्योंकि वे यज्ञ को नष्ट करते हैं-

यद् वै यज्ञेऽकुशला ऋत्विजो भवन्ति..... तदवै यज्ञस्य विरिष्टिमित्या चक्षते।।

ऋत्विजों का कार्य विभाजन

1. ब्रह्मा-जो सांगोपांग चार वेदों के जानने वाले हों, उनका नाम 'ब्रह्मा' है।

'ब्रह्मा' यज्ञ का प्रधान साधक, संरक्षक, अध्यक्ष, नियन्त्रक अधिष्ठाता कहलाता है। यह सभी कार्यों का मुख्य निरीक्षक होता है। यह यज्ञकार्य में कुशल होता है। यज्ञकर्म में ऋत्विक् और यजमान के समस्त कार्यों का जो सावधानी-पूर्वक निरीक्षण करता है। यज्ञ के अनुकूल ही सभी कार्य हों, इसका ध्यान रखता है।

2. अध्वर्यु-यज्ञ का आरम्भ और समापन अध्वर्यु के द्वारा होता है। इसी के द्वारा प्रैष करने पर होता मन्त्रोच्चारण करते हैं। इसे यज्ञ की प्रतिष्ठा कहा गया है।

यज्ञ सामग्री, समिधा, वेदी, कुण्ड, घृत, पात्रादि की शुद्धि तथा अग्नि में चींटी, कीट-पतंग आदि न जाने पावे, इसका ध्यान रखता है।

3. वेदमन्त्रों का गायन् उच्चारण करने वाला याजक 'उद्गाता' कहलाता है। इसे शुद्ध और सस्वर मन्त्रगायन करना होता है। आवश्यकतानुसार यज्ञ में नियत सूक्तों का ज्ञान होना भी अनिवार्य है।

4. होता-देवताओं का आह्वान करने वाला 'होता' कहा जाता है। इसे 'होमकर्ता' भी कहते हैं।

ऋत्विजों का विभाजन एक-एक वेद की विशेषज्ञता के आधार पर भी किया गया है। आचार्य यास्क कहते हैं-

**इति ऋत्विक् कर्मणां विनियोगं आचष्टे।।**

**ऋचां त्वः पोषमास्ते पुरुष्मान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु। ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वः।।**

**ऋ. 10/71/11, निरुक्त. 1/7.**

1. होता-ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्मान।।

उन ऋत्विजों में से 'होता' नामक ऋत्विक् ऋग्वेदी = ऋग्वेदवेत्ता अर्थात् ऋग्वेद का विशेषज्ञ होता है। वह ऋचाओं को बड़ी ही प्रामाणिकता एवं पुष्टि के साथ रखता है और मन्त्रों का यथार्थ अध्ययन-उच्चारण करता है।

साधारणतया होता या यजमान वह व्यक्ति होता है जो उस कार्य को आरम्भ करने, आयोजन करने का संकल्प करता है।

2. उद्गाता-गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।।

'उद्गाता' नामक ऋत्विक् सामवेद गायन का विशेषज्ञ होता है। इसे 'सामवेदी' भी कहते हैं। यह ऋचाओं में (शक्वलीषु) गायत्री छन्द्रवाले साम मन्त्रों को विशेषतः गाता है। अपने कार्य की महत्ता के पक्ष में भावनाएं तरंगितं करता है। उद्गाता के इस पुनीत कार्य को 'उद्गीथ' भी कहते हैं।

3. ब्रह्मा-ब्रह्मा त्वो वदति जातविधाम्।।

यह ऋत्विक् ब्रह्मविद्या (जातविद्यान्) का प्रतिपादन करता है। 'ब्रह्मा' अथर्वा = अथर्ववेदगी अर्थात् अथर्ववेद का विशेषज्ञ होता है। ब्रह्मा की आज्ञा पर होतृगण देव-आवाहन करते हैं। यह यज्ञ में होने वाली त्रुटि एवं प्रायश्चित बताता है कि अमुक दोष हो जाने पर अमुक कार्य करो। ब्रह्मा यज्ञ का अध्यक्ष होता है। वह-

**मनसैव ब्रह्मा यज्ञस्यान्यतरः पक्षं संस्करोति।। गोपथ ब्रा० 3/2**

ब्रह्मा मन के द्वारा यज्ञ के दूसरे पक्ष का संस्कार करता है। यज्ञ के पूर्ण संस्कार के लिए अथर्ववेद की अत्यन्त आवश्यकता है।

4. अध्वर्यु-यज्ञस्य मात्रा विमिमीत उत्वः।।

यज्ञ का निश्चित मात्रा में (यज्ञस्य मात्राम्), ठीक परिमाण में करना 'अध्वर्यु' का कार्य है। यज्ञ को हिंसा से बचाना भी इसी के अन्तर्गत आता है। यह ऋत्विक् यजुर्वेदविद् अर्थात् यजुर्वेदी होता है। यज्ञ के अन्य शेष कार्यों का ठीक-ठीक करना, यज्ञ में आहुति डालना, समिधा, हवन-सामग्री जुटाना हो अथवा और कुछ करना पड़ जाय, वह अध्वर्यु ही करता है। यज्ञ की बची हुई इति कर्त्तव्यता का (विमिमीते) नाना प्रकार से सम्पादन करता है।

यहां जो 'अध्वर्यु' शब्द आया है, इस विषय में आचार्यों का कहना है कि 'अध्वर्यु' और 'अध्वरयु' दोनों शब्दों का प्रयोग होता है। परन्तु वेद में आकार का लोप होकर 'अध्वर्यु' और लोक में 'अध्वरयु' होता है। व्युत्पन्ति इस प्रकार है-अध्वरं युनक्ति अर्थात् यज्ञ को जोड़ता है, सब सामान एकत्र कर उपस्थित करके यज्ञ को प्रस्तुत करता है।

बृहद्याग आदि में इन ऋत्विजों की सहायतार्थ आवश्यकतानुसार संख्या में वृद्धि भी की जा सकती है।

यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान 5.65-68

वस्तुतः चार वेद संहिताएं चार ऋत्विजों के निमित्त हैं-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org



# वेद सदा से चार हैं

-ले. पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

कुछ लोगों की मान्यता है कि मूलरूप से वेद एक ही था। महर्षि व्यास जी ने उसे चार भागों में विभक्त करके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसा कहने का आधार पुराण है।'' आदि काल में यजुर्वेद ही था, उसके चार विभाग वेदव्यास ने किये (विष्णु पुरान ३/६)

अग्नि पुराण के अनुसार चार भागों में विभक्त होने से पूर्व एक यजुर्वेद था जिसमें एक लाख मन्त्र थे। मत्स्यपुराण (१४४/१०) विष्णुपुराण (३/३/१८) में भी इसी मत का अनुमोदन किया है। लेकिन स्वयं वेद, आर्ष ग्रन्थों और आर्य वचनों से प्रमाणित होता है कि सृष्टि के आदि में ही एक साथ चारों वेदों का प्रादुर्भाव हुआ था। वेद व्यास जी द्वारा वेद के चार विभाग किये जाने की कल्पना अयुक्त एवं सर्वथा असंगत है।

वेद व्यास जी से पूर्व उपनिषद् और ब्राह्मण ग्रन्थ अस्तित्व में आ चुके थे। यह हो सकता है कि वेद व्यास जी ने अपने समय में भिन्न-भिन्न बहुत-सी शाखा बन जाने के कारण ब्राह्मण और श्रौत सूत्र आदि का निश्चय कर दिया हो कि किस-किस शाखा का कौन-सा ब्राह्मण है। यह भी सम्भव है कि वेद व्यास जी ने शाखाओं पर प्रवचन और व्याख्यान किया हो और इस प्रकार वे वेदों का प्रचार-प्रसार करने में बहुत सहायक रहे हों।

इस विषय में महर्षि दयानन्द लिखते है कि-''यह बात कि वेदव्यास जी ने वेद रचे हैं मिथ्या है, कारण वेदव्यास जी ने भी वेद पढ़े थे और उनके पितामह पराशर, उनके पितामह शक्ति और प्रपितामह वसिष्ठ और बृहस्पति आदि ने भी वेद पढ़े थे। जो व्यास ने बनाए होते तो वे कैसे पढ़ते, कारण व्यास जी तो बहुत पीछे हुए हैं। और जो उनका वेद व्यास नाम पड़ा है वह इस रीति से पड़ा है कि उन्होंने वेदों को पढ़ कर औरों को पढ़ाये हैं जिससे वेदों का पठन-पाठन फैलाया और वेदों में उनकी बुद्धि विशाल थी कि यथावत् शब्द, अर्थ और सम्बन्ध से वेदों को जानते थे। इसलिए इनका नाम वेद व्यास रखा गया''। (सन्त्यार्थ प्रकाश, प्रथम-संस्करण)

चारों वेदों का वर्णन त्रयी विद्या के नाम से भी किया जाता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वेद तीन हैं। यह वर्णन चारों वेदों से सम्बन्धित है। ब्राह्मण ग्रन्थों में त्रयी विद्या का वर्णन आया है। जिस शतपथ ब्राह्मण में चारों वेदों का नामोसहित उल्लेख मिलता है, उसी में यह भी लिखा है कि-''त्रयी वै विद्या-ऋचो यजूँषि सामानि इति'' (शतपथ ब्राह्मण ४/६/१) अर्थात् विद्या भेद से वेद तीन कहाते हैं।

**त्रयी विद्यामवेक्षेत वेदेषूक्ता मथाङ्गतः। ऋक्सामवर्णाक्षरतो यजुषो उथर्वण स्तथा। ( महाभारत शान्ति पर्व २३५/१ )**

महर्षि व्यास के इस श्लोक में त्रयी विद्या के साथ चार वेदों का उल्लेख होने से स्पष्ट हो जाता है कि त्रयी विद्या वेद चतुष्टय का ही दूसरा नाम है।

मनु महाराज के अनुसार विद्याएँ तीन हैं-दण्डनीति (राजनीति) आन्वीक्षिकी (पदार्थ विज्ञान) तथा अध्यात्म (शरीर, आत्मा व परमात्मा सम्बन्धी) वस्तुतः जब संहिताओं अथवा मुख्य प्रतिपाद्य विषय-ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान को लक्ष्य कर व्यवहार किया जाता है। तब निश्चय ही वेद चतुष्टय कहा जाता है। परन्तु जब केवल रचना की दृष्टि से वेद का उल्लेख होता है तब वेदत्रयी अथवा केवल त्रयी कहा जाता है। रचना तीन प्रकार की होती है-गद्य, पद्य और गीति। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद का क्रमशः पद्य, गद्य और गीति अर्थ करके चारों वेदों के लिए त्रयी शब्द का प्रयोग भी उत्तराकालीन है।

**''ऋचो नामास्मि यजुषि नामास्मि सामानि नामास्मि ( यजु० १८/६१ )**

जब स्वयं यजुर्वेद बार-बार चारों वेदों के नाम ले रहा है, त ''प्रारम्भ में एक यजुर्वेद था, कालान्तर में उसके चार भाग हुए'' जैसी बातें कैसी स्वीकार की जा सकती हैं ?

शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत्।

**अन्तर्मतिश्चराति निष्षिधं गोर्मद्देवानामसुरत्वमेकम्**

हे मनुष्यों ! जैसे युद्ध में रत समीपस्थ वीर के समीप कायर मनुष्य तुच्छ सा दिखता है, वैसे ही सर्वशक्तिमान अनन्त परमात्मा के समीप सूर्य आदि जगत् हीन और तुच्छ है। जो जगदीश्वर विद्या के कोश रूप और वाणी के आभूषण चारों वेदों को शासित करता है(रचता है) उसे ही तुम अपना इष्ट मानो।

स्वयं वेदों, वेदोत्तर वाङ्मय तथा अन्य आप्त वचनों से प्रमाणित है कि सृष्टि के आदि में ही एक साथ चारों वेदों का प्रादुर्भाव हुआ।

मेरा यह लेख लिखने का तात्पर्य यह है कि स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए वेदों को भुलाने हेतू पुराणों में कितनी गलत व असम्भव बाते लिख दी है, जिनको पढ़कर हमारे पौराणिक भाई यथ-भ्रमित हो गये हैं और वेद जो ईश्वरीय ज्ञान है उसको भुलाकर पुराणों में लिखी गलत बातें जैसे ईश्वर का अवतार लेना, मूत्तिपूजा को ईश्वर की उपासना का माध्यम बताना, श्राद्ध-तर्पण, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, जादू-टोना, ताबीज, श्राप व वरदान आदि अन्धविश्वासों को मानने से देश का जो पतन हुआ है उसको पाठकगण जान सकें और देव दयानन्द ने उनके कष्टों व मुसीबतों को सहन करते हुए अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्ड को कैसे दूर किया और वैदिक धर्म की किस प्रकार स्थापना की, यह सब जान सकें। इन सब बातों का इस लेख द्वारा सद् प्रयास किया है। आशा है सुधि पाठकगण इसका लाभ उठायेंगे।

## हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

आर्य समाज दीनानगर में हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कॉलेज की हिन्दी विभाग की अध्यक्षा मैडम पूनम महाजन, प्रिंसिपल जी. आर. महाजन जी, शास्त्री रमेश जी, शास्त्री जितेन्द्र जी थे। सभी वक्ताओं ने एक ही बात पर बल दिया कि आज हिन्दी भाषा से अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। हमें अपने कार्य, आचार व्यवहार में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। यह कार्यक्रम स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। अन्त में स्वामी जी महाराज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द मूलतः गुजराती थे एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे परन्तु उन्होंने ही कहा था कि हिन्दी भाषा के माध्यम से ही देश को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। इस अवसर पर प्रधान श्री रघुनाथ सिंह जी, सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, राधेश्याम महाजन, जोगेन्द्रपाल गुप्ता, मनोहर सैन ओहरी, वी.पी. ओहरी, रणजीत शर्मा, नानक चन्द भोगल, सरदारी लाल, मैडम रजनी ओहरी एवं बहुत से गणमान्य उपस्थित थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

**रमेश महाजन सचिव आर्य समाज**

## श्रीमती इंदिरा शर्मा जी पुनः प्रधान निर्वाचित

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का चुनाव पंडित योगराज शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजर लुधियाना की सभी सदस्यों ने पूर्व प्रधाना श्रीमती इंदिरा शर्मा जी का नाम प्रस्तुत किया। सर्वसम्मति से इसका अनुमोदन किया गया। श्रीमती इंदिरा शर्मा जी दूसरी बार स्त्री आर्य समाज की प्रधाना निर्वाचित हुई। श्रीमती इंदिरा शर्मा जी को आर्य समाज की कार्यकारिणी के गठन का अधिकार भी सर्वसम्मति से दिया गया। उन्होंने श्रीमती सुलक्षणा सूद जी को उप प्रधाना, श्रीमती जनक रानी जी को मंत्राणी, श्रीमती बाला जी गम्भीर को कोषाध्यक्ष घोषित किया। इसके साथ ही उन्होंने अन्तरंग सदस्यों का नाम भी घोषित किया।

www.thearyasamaj.org



# यह सृष्टि किसने, क्यों व कब बनाई ?

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, पताः 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

हम संसार के अन्य लोगों व प्राणी समूहों सहित अपने जन्म से इस सृष्टि वा संसार में रह रहे हैं। हमसे पूर्व हमारे पूर्वज व अन्य प्राणी इस संसार में रहते आये हैं। आगे भी यह सिलसिला जारी रहेगा। मौलिक प्रश्न यह है कि सारा संसार, सृष्टि या ब्रह्माण्ड, किसने, क्यों व कब बनाया है? इसका सही व यथार्थ उतर वैदिक धर्मियों के पास है जो वेद व वैदिक ग्रन्थों के प्रमाण, तर्क व युक्ति से इसका समाधान करते हैं। हमने भी इन तथ्यों को पढ़ा, समझा है और विचार किया है तथा उन्हें सत्य पाया है। समस्त सृष्टि को किस एक सता ने बनाया है ? का उत्तर प्रत्येक कार्य की सम्पन्नता में उस-उस कार्य का कोई कर्ता हुआ करता है। बिना कर्ता के कोई कार्य और कोई कार्य बिना कर्ता हुआ नहीं करता है। बिना कर्ता के कोई कार्य और कोई कार्य बिना कर्ता के कदापि नहीं होता। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय के कार्यों में भी एक सृष्टिकर्ता है। उस सृष्टिकर्ता को जानना ही प्रत्येक मनुष्य जिसके पास बुद्धि है और जो अपने आपको ज्ञानी, समझदार व विवकेशील मानते हैं, उनका मुख्य कर्तव्य है कि वह इस संसार के रचयिता को जाने। इसको जानने के लिए यदि वेद और वैदिक साहित्य को पहले देख, पढ़ व समझ लिया जाये तो इससे विषय को जानने में आसानी होगी। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय पर प्रकाश डाला है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और तैत्तिरीयोपनिषद के आधार पर वह कहते हैं कि हे मनुष्य ! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलय कर्ता है, जो इस जगत् का स्वामी, जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति-स्थति-प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा है, उस को तू जान और दूसरे को सृष्टिकर्ता मत मान।।1।। यह सब जगत् सृष्टि के पहिले अन्धकार से आवृत्त, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी, आच्छादित था। पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से, कारणरूप से कार्यरूप कर दिया।2।। हे मनुष्यों! जो सब सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का आधार और जो यह जगत् हुआ है, और होगा, उसका एक अद्वितीय पति परमात्मा इस जगत् की उत्पति के पूर्व विद्यमान था, और जिसने पृथिवी से लेके सूर्य पर्यन्त जगत् को उत्पन्न किया है, उस परमात्मा देव की प्रेम से भक्ति किया करें।।3।। हे मनुष्यों ! जो सब में पूर्ण पुरुष और जो नाशरहित कारण और जीव का स्वामी, जो पृथिव्यादि जड़ और जीव से अतिरिक्त है, वही पुरुष, इस सब भूत, भविष्यत् और वर्तमानस्थ जगत् को बनाने वाला है।।4।। जिस परमात्मा की रचना से ये सब पृथिव्यादि भूत उत्पन्न होते हैं, जिससे जीते (विद्यमान रहते) और जिसमें प्रलय को प्राप्त होते हैं, वह ब्रह्म है, उसके जानने की इच्छा करो।।5।।

जन्माद्यस्य यतः।। यह शारीरक सूत्र का अ. 1 सूत्र 2 है। जिससे इस जगत् का जन्म, स्थिति और प्रलय होतचा है, वही ब्रह्म जानने योग्य है। (प्रश्न) यह जगत् परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वा अन्य से ? (उत्तर) निमित कारण परमात्मा से उत्पन्न हुआ है, परन्तु इसका उपादान कारण प्रकृति है। (प्रश्न) क्या प्रकृति परमेश्वर ने उत्पन्न नहीं की ? (उत्तर) नहीं, वह अनादि है। (प्रश्न) अनादि किस को कहते हैं और कितने पदार्थ अनादि हैं ? (उत्तर) ईश्वर, जीव और जगत् का कारण, ये तीन अनादि हैं। इसके बाद स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में इन मान्यताओं से जुड़ी सभी शंकाओं का समाधान किया है और विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। पाठक कृपया इन्हें सत्यार्थप्रकाश में ही देख लें। महर्षि दयानन्द ने वैदिक प्रमाणों के आधार पर सृष्टि की रचना करने वाले ईश्वर के सत्य स्वरूप का वर्णन भी किया है। ईश्वर का उल्लेख करते हुए वह लिखते हैं कि ईश्वर सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उस सब का आदि मूल है। ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है। महर्षि दयानन्द ने इन पंक्तियों में ईश्वर वा सृष्टि को बनाने वाले सृष्टिकर्ता का जो स्वरूप व उसके गुण, कर्म व स्वभावों का वर्णन किया है वह तर्क व युक्तियों से भी पूर्णतः सत्य सिद्ध होता है। योग द्वारा समाधि अवस्था पर पहुंच कर ईश्वर का साक्षात्कार भी किया जा सकता है जिससे वैदिक सिद्धान्तों के वैज्ञानिक व सत्य होने में किंचित भी शंका नहीं रहती अपितु उनकी पुष्टि होती है। एक माता और उसके शिशु के उदाहरण से भी हम ईश्वर के सृष्टि की रचना के सिद्धान्त को समझ सकते हैं। मां अपने बच्चे की आवश्यकताओं को भली प्रकार जानती व समझती है। उसको स्वच्छ वस्त्र धारण कराती है, उसे उसके शरीर की आवश्यकता के अनुरूप स्वास्थ्य-वर्धक व हितकर भोजन कराती है, रोगी होने पर औषधोपचार करती है और नाना प्रकार से उसकी सेवा व रक्षा करती है। यह मां का स्वाभाविक गुण व धर्म है। इसी प्रकार पशु-पक्षी भी अपनी-अपनी सन्तानों के प्रति अपने कर्तव्य बोध में आबद्ध देखे जाते हैं। प्रकृति में प्रत्येक जड़ पदार्थ भी अपने धर्म व कर्तव्य का पालन करता है जैसे अग्नि जलाने व प्रकाश करने, जल शीतलता प्रदान करने, वायु श्वसन-क्रिया में सहायक होने आदि कार्यों को करते व कर रहे हैं। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, दयालु, कृपालु, सब जीवों का माता-पिता-आचार्य-न्यायाधीश है। यदि माता-पिता-पशु-पक्षी अपने सन्तानों की रक्षा व पालन कर सकते हैं, तो फिर ईश्वर ऐसा न करे, यह सम्भव नहीं है। माता-पिता आदि की तरह से ही ईश्वर भी सब जीवात्माओं की रक्षा व सुख देने के लिए सृष्टि बनाकर सबका पालन करता है, यह स्पष्ट होता है।

ईश्वर से बनी सृष्टि का प्रयोजन क्या है ? यह प्रश्न भी मनुष्य के मन में आना स्वभाविक है। इसका उत्तर है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, सृष्टि की रचना कर सकता है तथा पहले भी पूर्व कल्पों में अनेक बार उसने सृष्टि की रचना की है। कारण सत्, रज व तम गुणों वाली सूक्ष्म प्रकृति पूर्णतयः उसके वश व नियंत्रण में है। उस प्रकृति का ना ही सृष्टि के निर्माण के लिए है, सूक्ष्म व एकदेशी तथा ससीम पदार्थ जीवात्मा संसार व आकाश में बड़ी संख्या में है, उनके पूर्व कल्पों में प्रलय से पूर्व मनुष्य योनि में किए गये कर्म भोग करने से बचे हुए हैं, ईश्वर उन्हें उन कर्मों के अनुसार सुख व दुःख दे सकता है, ईश्वर सृष्टि की रचना कर सकता है, करता है तो वह जीवात्माओं वा मनुष्यों द्वारा प्रशंसित होता है न करे तो उसे निठल्ला ही कहेंगे। एक बच्चा स्कूल जाता है परन्तु पढ़ाई मन लगा कर नहीं करता, परीक्षा में फेल हो जाता है, घर वाले उसे निठल्ला व निकम्मा कहते हैं। वह सामान्य रूप से खाता-पीता व सभी काम करता है परन्तु पढ़ाई की उपेक्षा करता है जिसे वह चाहे, प्रयास करे, संकल्प कर उसका आचरण करें तो कर सकता है, परन्तु करता नहीं और अपनों व दूसरों के द्वारा निन्दित होता है। ऐसा ही कुछ-कुछ सृष्टि की रचना न करने पर ईश्वर के विषय में भी कहा जायेगा। बुद्धिमान व विवेकशील मनुष्य कभी कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करता। प्रकृति का प्रत्येक प्राणी ही नहीं अपितु जड़ परमाणु व पदार्थ भी क्रियाशील व गतिशील देखे जाते हैं तो चेतन, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ ईस्वर भी सृष्टि रचना में समर्थ होने व इसे अपना कर्तव्य जानकर सृष्टि की रचना सुप्रयोजन करता है जिससे प्रलय अवस्था में प्रसुप्त जीवों को सुख व उनके पूर्व कर्मों का भोग प्राप्त हो सके। इसी प्रयोजन से ईश्वर सृष्टि व मनुष्यों सहित नाना प्राणी योनियां बनाकर उनका संचालन व व्यवस्था कर रहा है।

सृष्टि कब बनी है, इसका उत्तर भी वैदिक धर्मियों के पास, है। आर्य लोग सृष्टि के प्रथम दिन से ही काल गणना करते आये हैं।

उन्होंने पूरे सृष्टि काल को 1000 चतुर्युगियों में बांटा है। एक चतुर्युगी में चार युग क्रमशः सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग होते हैं। कलियुग 4.32 लाख वर्षों का होता है, इसका दुगुना द्वापर, तीन गुना त्रेता और

(शेष पृष्ठ 7 पर)

www.thearyasamaj.org



पृष्ठ 4 का शेष-ऋत्विक

ऋचा एवं हौत्रं क्रियते, यजुषा आध्वर्यवं, साम्ना औद्गात्रं अथ केन ब्रह्मत्वं क्रियते ऋचा विद्यया इति ब्रूयात्।। एत. ब्रा. 5/33

होता का कार्य ऋग्वेद से, अध्वर्यु का कार्य यजुर्वेद से उद्गाता का कार्य सामवेद से और ब्रह्मा का कार्य तीनों से किया जाता है।

'गोपथ ब्राह्मण' के पूर्वार्ध में और भी स्पष्ट किया गया हैं-

अथर्वाङ्गिरोभिर्ब्रह्मत्वम्।।

ब्रह्मा का कार्य अथर्वाङ्गिरस् (अथर्ववेद) से किया जाता है।

इसे सायण की ऋ. भा. भू. में और भी स्पष्ट किया गया है।

तस्माद् ऋग्विदमिव होतारं वृणीष्व, यजुर्विदमध्वर्युम्, साम-विदमुद्गातारं, अथर्वाङ्रिसोविदं ब्रह्माणम्।।

ऋग्वेदज्ञ को होता बनाओ, यजुवेदज्ञ को अध्वर्यु, सामवेदज्ञ को उद्गाता और अथर्वेदी को ब्रह्मा।

इसी स्थल पर गोपथकार ने पुन: लिखा है-

प्रजापतिर्यज्ञमतनुत स ऋचैव होत्रमकरोत्, यजुषाध्वर्यवम्, साम्नोद्गात्रं, अथर्वाङ्गिरोभि: ब्रह्मत्वम्।।

प्रजापति ने यज्ञ का विस्तार किया। उन्होंने ऋग्वेद से 'होता' का कार्य सम्पन्न किया, यजुर्वेद से 'अध्वर्यु' का, सामवेद से 'उद्गाता' का तथा अथर्ववेद से ब्रह्मा का।

अथर्ववेद का 'ब्रह्मवेद' नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यज्ञ का अधिष्ठाता 'ब्रह्मा' इसी वेद के साथ नियुक्त होता है।

महर्षि दयानन्द ने चार ऋत्विजों के वरण करने पर होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा ये नाम निर्धारित किए हैं। एक ऋत्विज के होने पर उसकी पुरोहित संज्ञा दी है। वही ब्रह्मा है। उसी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न होता है।

महर्षि ने होता, उद्गाता, अध्वर्यु के आसनों, नामों का तो उल्लेख किया है परन्तु इनके कार्यों का निर्देश नहीं किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये आवश्यकतानुसार बृहद् यज्ञों में 'ब्रह्मा' के सहयोगार्थ नियुक्त किए जा सकते हैं। वर्तमान समय में बृहद्यज्ञों-ऋग्वेद पारायण, यजुर्वेद पारायण आदि में ब्रह्मा के अतिरिक्त वेदपाठियों का आवश्यकतानुसार चयन किया जाता है। वस्तुत: ब्रह्मा ही 'स एव ज्येष्ठ: स एव कनिष्ठ: की उक्ति को चरितार्थ करता है। यही परम्परा आर्य समाजों में सर्वत्र प्रचलित है। अपवाद की बात अलग है।

ऋत्विजों के आसन

महर्षि दयानन्द संस्कार विधि में लिखते हैं-

"इनका आसन वेदी के चारों ओर अर्थात् होता का वेदी से पश्चिम आसन पूर्व मुख, अध्वर्यु का उत्तर आसन ब्रह्मा का दक्षिण आसन उत्तर मुख होना चाहिए। यजमान का आसन पश्चिम में पूर्वाभिमुख अथवा दक्षिण में आसन पर बैठ के उत्तराभिमुख रहे।"

यद्यपि महर्षि ने यजमान के लिए दक्षिण में आसन का वैकल्पिक विधान किया है तथापि यह प्रचलन में नहीं है। बहुकुण्डीय यज्ञों में तो चारों ओर यजमान बिठा लिए जाते हैं।

परन्तु सं. वि. गृह्याश्रम प्रकरण में महर्षि लिखते हैं-

"गृहपति सर्वत्र पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठा करे।"

"इस ऋत्विजों को सत्कार-पूर्वक आसन पर बैठाना, और वे प्रसन्नतापूर्वक आसन पर बैठें और उपस्थित कर्म के बिना दूसरा कर्म वा दूसरी बात कोई भी न करे।"

यज्ञ के सभी कार्यकर्ता अपने-अपने स्थान पर स्वस्थ शान्तचित्त, प्रसन्न, शुद्ध शरीर, शुद्ध वस्त्र धारण करके बैठें। ब्रह्मा के निर्देशानुसार सभी कार्य अनुशासन एवं शिष्टता-पूर्वक करें।

शुद्ध यजमान एवं ऋत्विक्

शुद्धा: पूता भवत यज्ञियास:।।

यज्ञसिद्धि के लिए यजमान और ऋत्विक् सभी शुद्ध-पवित्र हों, तभी अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

सशुद्धैर्यजमानस्य ऋत्विगिॅभश्च यथाविधि।

शुद्धद्रव्योपकारणौर्यष्टव्यमिति निश्चय:।।

तथा कृतेषु यज्ञेषु देवानां तोषणं भवेत्।

श्रेष्ठ: स्यात् देवसन्धेषु यज्वा यज्ञफलं लभेत।। महाभारत

शुद्ध, सुयोग्य ऋत्विजों से विधिपूर्वक शुद्धसामग्री से यज्ञ करावे। विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्न होने से देवता अर्थात् विद्वज्जन सन्तुष्ट होते हैं, जिससे अच्छे सम्मान तथा यथोचित यज्ञफल की प्राप्ति होती है।

अत: महर्षि दयानन्द बाह्य और आन्तरिक शुद्धि के सम्बन्ध में लिखते हैं-

आदौ शरीरशुद्धि: कर्त्तव्या सा बाह्य जलादिना।

आभ्यान्तरारागद्वेषासत्यादित्यागेन।

पहले बाह्य-जलादि से शरीर की शुद्धि और राग-द्वेष, असत्य आदि के त्याग से भीतर की (आन्तरिक) शुद्धि करनी चाहिए।

मनु महाराज कहते हैं-

**अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति।**

**विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धि-ज्ञानेन शुध्यति।। मनु. 5/109**

शरीर जल से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

**क्रमश:**

## शोक प्रस्ताव

बड़े दुखी हृदय से सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री एवं पूर्व एम.एल.ए. श्री विजय साथी जी मोगा का भान्जा श्री रमन कुमार 29 वर्षीय का गत दिनों देहान्त हो गया। उनकी आत्मिक शान्ति के लिये 29 सितम्बर 2016 को सनातनधर्म मंदिर न्यू माडल टाउन लुधियाना में दोपहर 2 बजे से 3 बजे तक शोक सभा का आयोजन किया गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री विजय साथी जी से गहरी शोक संवेदना प्रकट करती है।

## पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री सम्मानित

सामाजिक, सास्कृतिक, नैतिक एवं शैक्षिणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के दृष्टिगत "लायन्स क्लब फाजिलका (विशाल)" द्वारा 5 सितम्बर, 2016 को शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर विशेष समारोह में प्रशस्ति पत्र एवं शाल भेंट करते हुए पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री को सम्पमानित किया गया। क्लब के चेयमैन श्री शेखर छाबड़ा ने अत्यन्त भावपूर्ण शब्दों में बताया कि शास्त्री जी ने प्राईमरी से लेकर कालेज स्तर तक "वैदिक ज्ञान परीक्षा" का आयोजन करके छात्र-छात्राओं में नैतिक शिक्षा के प्रति जागरुकता उत्पन्न की है। जिसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। भाषण, सुलेख, चित्रकला, रंग भरो सदृश प्रतियोगिताओं के द्वारा उन्होंने वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। अत: लायन्स क्लब फाजिलका उन्हें सम्मानित करते हुए स्वयं को अत्यधिक गौरवान्वित अनुभव करता है।

पृष्ठ 6 का शेष-यह सृष्टि किसने.....

चार गुना सतयुग होता है। चार युगों अर्थात् एक चतुर्युगी का योग 43.20 लाख वर्ष होता है। जब ईश्वर ने अमैथुनी सृष्टि की तो प्रथम मन्वन्तर का सतयुग का प्रथम दिन था जो उत्तरोत्तर बढ़ते आ रहे हैं। पूरे सृष्टिकाल की गणना करने के लिए 71 चतुर्युगीयों के समान अवधियों के 14 मन्वन्तर बनायें हैं। प्रतिदिन एक दिन जोड़ते व एक दिन घटाते जाते हैं। वर्तमान में सृष्टि के बनने व मानव के उत्पन्न होने से अब तक 1,96,08,53.116 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नया वर्ष आरम्भ होता है। इतना काल सृष्टि उत्पन्न होकर मनुष्योत्पत्ति के बाद व्यतीत हुआ है। इस समय मानव व वेद सृष्टि संवत् के एक अरब छियानवे करोड़ आठ लाख त्रैपन हजार एक सौ सोलहवें वर्ष का भाद्रपद मास चल रहा है और आज 11 सितम्बर

2016 को भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि है। भाद्रपद मास से पूर्व चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण मास इस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इतने वर्ष पूर्व हमारी इस सृष्टि का निर्माण हुआ था। सृष्टि संवत् को स्मरण रखने के लिए सभी आर्य वैदिक धर्मी लोग यज्ञादि से पूर्व संकल्प पाठ का उच्चारण करते है उसके अनुसार भी यही सृष्टि संवत् विद्यमान है। सृष्टि विषयक ज्ञान के लिए सभी जिज्ञासुओं को वैदिक साहित्य का अध्ययन करना चाहिये। ऐसा करने पर वह संसार को भली प्रकार जानने सहित अपने जीवन के उद्देश्य वा लक्ष्य को भी जान सकेंगे जो और कुछ नहीं अपितु धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति अथवा अभ्युदय और नि:श्रेयस सिद्धि है। ईश्वर उपासना, वैदिक धर्म व. कर्त्तव्यों आदि के पालन से यह लक्ष्य प्राप्त होते हैं। मोक्ष प्राप्ति होने पर मनुष्य का जीवात्मा 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक दु:खों से पूर्णतया मुक्त होकर ईस्वर के आनन्दस्वरूप में ईश्वर के साथ रहता हुआ आनन्द को भोक्ता है। यही मनुष्य की जीवात्मा का चरम लक्ष्य है। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर मोक्ष विषय को पूवर्णतय: समझा जा सकता है। वैदिक धमी सभी ऋषि, योगी इतर आर्यजन इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपना सारा जीवन अब्युदय व मोक्ष प्राप्ति के कार्यों में ही लगाते थे। हम समझते हैं कि पाठक हमारे आज के लेख के विषय को जानने में समर्थ होंगे और इस लेख से उनको इस विषय को समझने में कुछ सहायता मिलेगी। इति शम्।

www.thearyasamaj.org



# वेदवाणी

## सबको नचाने वाला इन्द्र

**इन्द्र इद्धो महानां दाता वाजानां नृतुः।**
**महाँ अभिज्ञ्वा यमत्॥**

**-साम० उ० १।२।१; ऋ० ८।९२।३**

**ऋषि-श्रुतकक्षः॥ देवता-इन्द्रः॥ छन्दः-पादनिचृद्गायत्री॥**

*__विनय__-इस संसार के जो तेजस्वी महापुरुष हज़ारों-लाखों लोगों के नेता होकर बड़े-बड़े काम कर रहे हैं, उनमें उस तेज़ और महाबल को उत्पन्न करने वाले इन्द्र परमेश्वर ही हैं। इस संसार में जो नाना आन्दोलन उठते और दबते रहते हैं, कभी कोई लहर चलती है, कभी कोई तथा इन आन्दोलनों और लहरों में उस समय के सब मनुष्य बलात् खिंचे चले जाते हैं, यह सब खेल खिलाने वाले और हमें नाच नचाने वाले भी इन्द्र ही हैं। ये इन्द्र हम सबको अपना थोड़ा या बहुत तेज़ और बल दे रहे हैं और उस द्वारा नाच नचा रहे हैं। आज जो हममें महातेजस्वी है, वह कभी कुछ दिनों में सर्वथा निस्तेज हो जाता है तथा एक तुच्छ पुरुष कुछ ही दिनों में यशस्विता के शिखर पर पहुँचा देखा जाता है। यह सब उसका खेल है। आओ, हम अपने तेज़ व बल का सब अभिमान त्यागकर, नम्र होकर, उस महान् इन्द्र की शरण में पड़ जाएँ। तनिक देखो, वह इन्द्र कितना महान् है, जो अकेला हम अनन्त जीवों को कठपुतली की तरह नचा रहा है-स्थावर, जंगम सभी असंख्य प्रकार की सृष्टि को हिला रहा है? वह महान् इन्द्र इस ब्रह्मण्ड को नचा रहा है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उसकी इस सृष्टि में कुछ व्यवस्था नहीं है, मनमानी या अन्धाधुन्धी है। वह हमें नाच भी पूरी व्यवस्था के साथ, अटल सत्यनियमों के साथ नचा रहा है। इसका कारण यह है कि 'अभिज्ञु' है, सबके अभिप्रायों को एकदम जानता है, सर्वान्तर्यामी है, इस सब ब्रह्मण्ड की वह आत्मा है। हम सब अनन्त प्राणियों के हृदयों में आत्मा की आत्मा होकर, अन्तर्यामी होकर, वह अकेला ही बैठा हुआ अनन्त-जीवरूप अनन्त चक्रों वाले इस महायन्त्र को चला रहा है। अहो, वह इन्द्र परमेश्वर कितना महान् है? कितना महान् है??*

## आर्य समाज बरनाला में वर्ष 2016-17 के लिए चुनाव सम्पन्न

दिनांक 11.09.2016 को आर्य समाज बरनाला की साधारण सभा में प्रधान डॉ. सूर्य कान्त शोरी की अध्यक्षता में आर्य सभा सदों की बैठक हुई। सर्व प्रथम डॉ० सूर्य कान्त शोरी जी ने अपने प्रधानगी भाषण में पिछले वर्ष 2015-16 में हुए आय-व्यय का ब्यौरा जो कि पहले ही अन्तरंग-सभा में पास हो चुका था ; पूरे हाउस में पास कराया तथा गत वर्ष के हुए विकास कार्यों का सविस्तार जानकारी देते हुए सभी आर्य सभासदों का धन्यवाद किया।

वर्ष 2016-17 की वार्षिक चुनाव-प्रक्रिया आरम्भ की गई। श्री हरमेल सिंह जोशी तथा श्री भारत भूषण मैनन जी को संयुक्त पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया। पिछले वर्षों से लगातार प्रधानपद के रूप में डॉ० सूर्य कान्त शोरी के कार्य, व्यवहार, सादगी एवं सच्चाई तथा आर्य समाज के प्रति समर्पण-भाव को देखते हुए पुनः सातवीं बार प्रधानपद के लिए डॉ० सूर्य कान्त शोरी का नाम श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा, श्री भारत मोदी, श्री राम कुमार सोवती एवं श्री शिव कुमार बत्ता जी ने प्रस्तुत किया। सदन में बैठे सभी सदस्यों ने हाथ ऊँचे ऊठाकर उनका अनमोदन किया। इस प्रकार डॉ० सूर्य कान्त शोरी को सातवीं बार प्रधान के रूप में सर्व सम्पमति से निर्वाचित किया गया। समूह सदन द्वारा वर्ष 2016-17 के लिए आर्यसमाज की कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार भी प्रदान किया। सभी उपस्थित सदस्यों ने करन्तल ध्वनि से नवनिर्वाचित हरमन प्यारे प्रधान जी का स्वागत किया। प्रधान जी ने सभी का धन्यवाद किया। शान्ति-पाठ के साथ चुनाव प्रक्रिया का समापन किया गया।

आर्य समाज बरनाला की नवगठित कार्य-कारिणी (वर्ष 2016-17)

1. डा० सूर्य कान्त शोरी प्रधान, 2. श्री हरमेल सिंह जोशी उप-प्रधान, 3. श्री भारत भूषण मैनन उप-प्रधान, 4. श्री तिलक राम मंत्री, 5. श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा कोषाध्यक्ष, 6. श्री राम चन्द्र आर्य (अधि ० आर्यवीर दल) पुस्तकालयाध्यक्ष, 7. श्री वसन्त कुमार शोरी वेद-प्रचार-मंत्री, 8. श्री केवल जिन्दल अंतरंग-सदस्य, 9. श्री भारत मोदी अंतरंग-सदस्य, 10. श्री राजेश गाँधी अंतरंग-सदस्य, 11. श्री शिव कुमार बत्ता अंतरंग-सदस्य, 12. श्री राम कुमार सोवती अंतरंग-सदस्य, 13. श्री सूरज मान गर्ग अंतरंग-सदस्य, 14. श्री विजय आर्य अंतरंग-सदस्य। **-तिलक राम मन्त्री आर्य समाज बरनाला**

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।